सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 181

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 38
जनवरी – 2020

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

षड्विकार

(प.पू. मो. जिलानी बाबा 17.12.1961)

गुरूबंधु भगिनियों

विमोचन मतलब मुक्तता और यह मुक्तता किससे तो ऋणानुबंध से। हमें गर्मी होने लगी तो हम कपड़े उतारते हैं जैसे शरीर के तापमान से बाहर का तापमान बढ़ गया और वह सहा नहीं गया तो हम कपड़े उतारते है उसी प्रकार प्राप्त जन्म में जो दुःख भोगने है वे मुझे सहन नही होते है इसलिए उपासना करके अपने कर्मों का विमोचन कर लेना है ताकि उन दुःखों का ताप कम होगा। यह गर्मी सहन करनी ही है, यह एकबार तय कर लिया ना?तो इस परिस्थिति में धूप कम करनी चाहिए या कपड़े उतारने चाहिए? धूप कितनी भी तेज होगी तो भी शाम को छः बजे के बाद कम तो होगी ही। शाम को उस नारायण को ही (सूर्य को) जाने के लिए कहा है तो फिर इस नर को गर्मी होती है, यह बात कैसे मान लें? जिस प्रकार शाम को ठंडा हो जाता है उसी प्रकार दुःख के बाद सुख आता ही है, इसलिए दुःख–दुःख ऐसे हमेशा चिल्लाते हो यह झूठ है।

इस संसार के मोहपाश का जो गरम सूट आपने पहना है, उसे बदन से कैसे उतारना यह सवाल है। कोट उतारने के अनेक प्रकार है। यह कोट मोह और माया इन दो हाथों से जैसे बदन पर चढ़ाया, वैसे ही उसे उतारना है। लेकिन कोट सिलवाने के बाद

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

जब पहली बार पहना उस वक्त जैसा था वैसा आज नहीं है, क्योंकि इतने साल काया, वाचा मन से उपयोग करने से व कई बार धोने से, वह सिकुड़ गया है तो अब वह कैसे निकलेगा। कोट उतारने के बाद शर्ट और बाद में बनियान उतारना है, लेकिन उन्हें कहाँ टाँगकर रखोगें? टाँगकर रखने की व्यवस्था की है क्या? आज तक कभी कपड़े उतारे ही नही और जब कभी उतारे तब उसे टाँगकर रखने के बजाय उसे सिरहाने रखकर सो गए। वास्तव में परिस्थिति ऐसी होनी चाहिए कि यह मैं हूँ और ये मेरे कपड़े ऐसा तुम दिखा सको।

कर्म से मुक्तता मतलब विमोचन। लेकिन कर्म किस के कारण घटित होते है वासना, विकारों के कारण। आप जिसे षड्विकार कहते हो, वह छः अवस्था हैं और उनमें से ही विचार, इच्छा, विकार और वासना उत्पन्न होती हैं। घर में जब मेहमान आए तब पानी बर्तन में ही था। सासूजी ने चाय बनाने के लिए कहा तब उसमें चायपत्ती और चीनी डालने पर चाय तैयार हुई। इन छः अवस्थाओं के पूर्णत्व को ही मानवीय जीवन कहा है। उस में से एक भाग (हिस्सा) आपने उठा लिया परन्तु एक की वासना यह दूसरे का विचार हो सकती है। किसी की छः में से एक अवस्था में विकृत (विपरीत) अवस्था निर्माण हुई और तब उसके हाथ से जो कर्म हुआ उस क्षणिक अवस्था को पाप कहा गया, एक ने पाप किया है और दूसरे ने प्रमाद किया हैं। एक पाप करता है उस समय दूसरा प्रमाद करता है, इस तरह होता रहता है। कार्यालय को जाने का रूट (रास्ता) निश्चित हुआ कि बहुत सहजता से जाते हो और घर वापस आते हों। उतनी ही सहजता से आप षड्विकार, षड्विकार ऐसा कहते आए हो और परमेश्वर की ओर निकल पड़े हो। लेकिन परमेश्वर कहते हैं कि वास्तव में वे तो मित्र हैं, और निसर्ग में कितना सारा कार्य कर रहें हैं और वो ही आप में हैं, फिर भी आप उन्हे शत्रु कहते हो तो मेरी कृपा का लाभ तुम्हें कैसे होगा?हमारे गुरू ने हमें ऐसा सिखाया है कि पहले मित्र हुए बिना शत्रु नहीं हो सकता (पहले मित्र होता है उसके बाद ही शत्रु हो सकता है)। आप पोते से खेलते हो लेकिन पोता अपने आप से खेलता है। आप उसके साथ खेलते वक्त अपना ही बालरूप देखते हों। शड्विकार शत्रु हैं, वे वासना विकार निर्माण करते हैं, उन्हे जीता नही जा सकता हैं, ऐसा कहा तो आप कुछ भी करने के लिए आज़ाद हो जाते हो। लेकिन मैं कहता हूँ कि वे मित्र है । उन्होने इस जगत का कल्याण किया है, वैसे ही वे इस देह का कल्याण किए बिना नही रहेंगे। साधूसंतों ने उन्हे षड्रिपू क्यों कहा तो वे तुम्हारे शत्रु है ऐसा कहने पर आपके बर्ताव की सीमा यह है, फिर यदि उन्हें शत्रु की जगह पर मित्र कहा होता तो आपने क्या किया होता, यह बताना मुश्किल हैं।

कोई एक नई खाने की चीज हम पहले थोड़ी मात्रा में घर लाते हैं और यदि घरवालों को पसंद आई तो 10 सेर के लिए ऑडर देते है। उसी प्रकार जन्म–जन्म में षड्विकार की एक अवस्था में विकृत (विपरीत) अवस्था आने से हमने कोई कार्य थोड़ी मात्रा में किया, लेकिन जैसे

एकबार चखने पर बडा ऑर्डर दिया हैं वैसे वह कर्म हर जन्म में हमारे द्वारा ज्यादा मात्रा में घटित हुआ और आज हम में संपूर्ण विकृति हो गई है। इस कर्मपरंपरा से मुक्त हुए बिना यह रूकने वाला नही है। निसर्ग में और हममें 'काम' सुप्त है। लेकिन उसका कार्य अमर्याद हैं। दाँत साफ करना यह क्रिया या थोडा सा दाग आया तो उसे तुरंत साफ करना यह क्रिया 'काम' के कारण ही होती हैं। दाँत साफ करना यह क्रिया है मगर उसके लिए महंगा टूथ पेस्ट का उपयोग करना यह वासना है। थोड़ा सा दाग भी तुरंत साफ करना, यह नैसर्गिक शुद्धता और सफाई, सात्विकता के कारण हैं।

निसर्ग की ओर देखने से यह दिखाई देगा कि आज अपने पास जो कुछ है, वह निःसंकोचता से देता हैं। जैसे आप आम की ओर खाने की दृष्टि से देखते हो परन्तु आम, मैं उस फल में हूँ या नहीं (गुठली के रूप में) यह देखकर फल का त्याग करता हैं। "कर्मण्येवाधिकारस्ते माँ फलेशु कदाचन" इसका अर्थ यही हैं। तुम उपासना करते हो उस उपासना में क्या तुम होते हो? जब तुम श्रीखंड में पूरी तरह से लिपटे (डूबे) होंगे उसी वक्त उसका त्याग करवाकर मैं तुम्हारा कर्मविमोचन करूँगा। क्या आज तक आपने पाप या पुण्य भी पूर्णत्व से (पूरी तरह से) किया है? किया गया कर्म और तुम अलग नहीं होना चाहिए। वह कर्म मतलब प्रत्यक्ष आप, इतना क्या आप उसमें एकरूप हुए हो? हमने अगर खिड़की बंद कर दी तो प्रकाश और हवा अंदर नहीं आएगी। प्रकाश, हवा ये निसर्ग के राजा है। उन्हें कौन रोक सकता हैं?परन्तु ऐसा है तो भी दरवाजा बंद हैं, तो हमें अंदर नहीं जाना है, इतनी उनकी दक्षता है फिर तुम कहाँ हो?

आज एक सब्जी खाई तो कल दूसरी सब्जी लाने की इच्छा होती है या कितना ही मुश्किल समय हो फिर भी कल सुख के दिन आएंगे इस आशा से जीनेवाला मनुष्य यह सब, 'कामदेवता है' इसलिए ही करता है। वह प्रत्यक्ष देवता है, लेकिन उसे शत्रु समझकर आप ईश्वर को ढुँढ़ने निकले हो। भगवान कहता है तुझे आशीर्वाद दूँ तो किस बात पर? वास्तव में इन छः देवताओं के अस्तित्व से ही परमेश्वर का भाव प्रकट होता है। चीनी की मिठास समझने के लिए उसे किसी चीज में मिलाना पड़ता हैं, तब उस पदार्थ में आए स्वाद से चीनी की मिठास महसूस होती हैं। उसी प्रकार सद्गुरूकृपा अपने जीवन में मिलाने से ही उसकी मिठास मालूम होगी उसके बिना नहीं। सद्गुरू कृपा के बिना जीवन व्यर्थ हैं, यह भावना होगी तभी कृपा की मिठास समझेगी। अभी आपके कुछ काम हो रहे हैं, इससे आप कृपा अजमा रहे हो, लेकिन यह गलत हैं। कर्मविमोचन चल रहा हैं, मार्ग खुल रहा हैं इसलिए अब आपके कार्य होंगे ही। परन्तु क्या उस कार्य के साथ ही तुमने जाना है या खुद में सदगुरूकृपा से कितना सुधार हुआ है इसका अभ्यास करना है? गुस्सा आया तो उसे निग्रह से रोक सकते है, यह नामस्मरण से होता हैं और इसे कहते हैं कृपा। अगर इस तरह से इसका अभ्यास हुआ तो तुम्हारी प्रगति होगी। जहाँ परोपकार करना चाहिए ऐसा एहसास होने पर भी परोपकार नहीं किया जाता, उसे पाप कहते हैं। आज आपकी

पाप पुण्य की कल्पनाएँ अलग ही हैं। मिसाल के तौर पर मान लीजिए कि आपने रू 5/– स्क्वेअर फीट की दर से जमीन खरीदी और उसे रू 15/– स्क्वेअर फीट के भाव में बेच दी, और यह व्यवहार झूठ बोलकर हुआ और उससे आप को नफा (फायदा) हुआ। फिर झूठ बोलने के लिए गद्दी पर आकर आप बाबा की क्षमा माँगते हो, और हमने प्रायश्चित कर लिया इस भावना से फिर से दूसरा व्यवहार करने लगते हो, इसे मैं पाप नही मानता क्योंकि यह व्यवहार (लेनदेन) हैं। लेकिन ऐसे व्यवहार से प्राप्त पैसों में से आरोग्य (स्वास्थ्य) अथवा शिक्षा के लिए कुछ भी पैसा खर्च ना करके केवल बाबा के सामने कान पकड़ना इसे मैं पाप मानता हूँ।

आपका जीवन सुख समाधान से गुजरे इसलिए जैसे 'काम' हमेशा प्रयत्नशील हैं, वैसे ही आपको आसानी से ईश्वर प्राप्ति हो इसलिए भी वह व्याकुल हैं। लेकिन क्या आप उसे मौका देते हो?'काम' आपको बताता रहता हैं कि जैसे आप सुंदर दिखने के लिए कोशिश करते हो वैसे ही आपका भगवान सुंदर दिखने के लिए उसे केसरी गंध लगाओ। भक्त जबतक प्रसन्न नही हैं, भगवान प्रसन्न नही होते व भगवान प्रसन्न हुए बिना भक्त का उद्धार नही होता। मन बड़ा किए बिना प्रसन्नता नही मिलती। 'काम' कहता है कि तुम में जो विकृति है वह तुम भगवान को अर्पण करो, वह किए बिना भगवान की पूजा करके तीर्थ सड़क पर डालने से उसे नाली में डालना अच्छा है। शास्त्र में कहा है कि जो सागर में मिला वह पवित्र हो गया है, लेकिन नाली में तीर्थ डालने से तीर्थ गटर में जाएगा इसलिए तुम तीर्थ सड़क पर डालते हो और ऑफिस जाने वालों के कपड़े खराब करते हो। मैले कपड़े आप लॉंड्री में डालते हो परन्तु अगर केवल कॉलर खराब हो, तो भी सिर्फ उसे ना धोते हुए जैसे पूरा कपड़ा भट्ठी में डाला जाता है वैसे ही हमारी यह लॉंड्री है जिसमें हम सभी को अच्छे से धोते हैं।

।। शुभम् भवतु।।

सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible